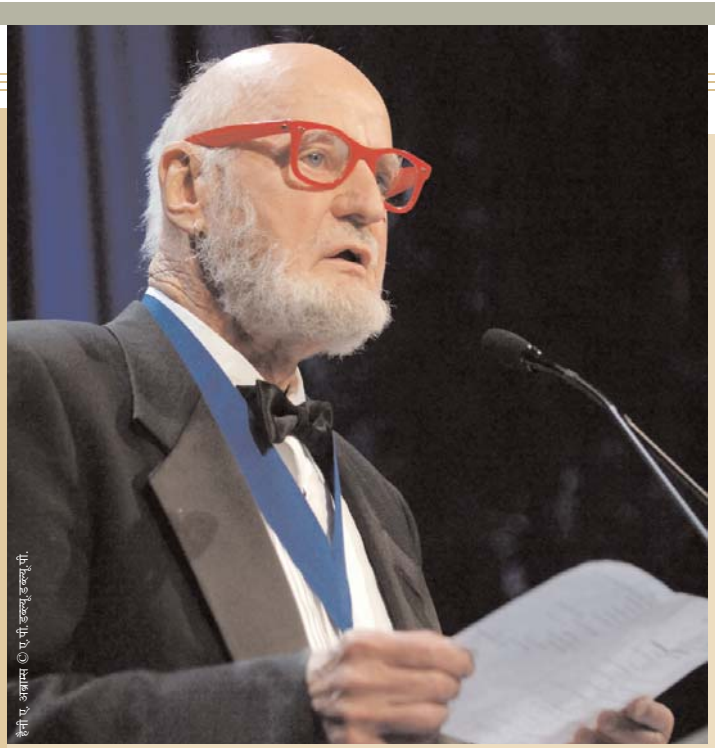
हैनी ए. अब्बास © पी.डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

लॉरेंस फरलैंगिटी

साहित्य का कमांडर

अंजुम नईम

चर्चित बीट आंदोलन की बौद्धिक पृष्ठभूमि एक खास राजनीतिक संदर्भ रखती है और इस संदर्भ की सबसे विश्वसनीय पहचान लॉरेंस फरलैंगिटी का व्यक्तित्व था। लॉरेंस फरलैंगिटी बुनियादी तौर पर उदार विचारधारा के लिए सक्रिय संगठन के कार्यकर्ता थे और अपनी साहित्यिक व्यस्तता के बावजूद उसके लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने काफी जद्दोजहद की। दूसरे विश्व युद्ध में उन्होंने अमेरिकी नौसेना में जहाज के कमांडर के रूप में भाग लिया। यह अनुभव बाद में उनके सक्रिय राजनीतिक और साहित्यिक जीवन में बहुत काम आया। उन्होंने साहित्य के हर क्षेत्र में काम किया। कविता, कहानी, आलोचना और आलेखों के साथ ही पत्रकारिता, फिल्म कथानक और कला पर टिप्पणी के जरिए उन्होंने व्यापक लोकप्रियता हासिल की।

लॉरेंस फरलैंगिटी के आरंभिक जीवन की यादें खास रोचक नहीं हैं। उनका जन्म 24 मार्च 1919 को न्यूयॉर्क के यांकर्स में हुआ था। बहुत कम उम्र में ही लॉरेंस फरलैंगिटी के सिर से मां का साया उठ गया। उन्हें जन्म देने के बाद ही उनकी मां ने मानसिक संतुलन खो दिया और उन्हें लंबे समय तक मानसिक रोगियों के अस्पताल में डाल दिया गया। मां के अस्पताल में होने के कारण लॉरेंस फरलैंगिटी को उनकी एक रिश्तेदार के यहां पालन-पोषण के लिए फ्रांस भेज दिया गया। पांच साल की उम्र में जब वह अमेरिका लौटे तो वह फ्रांसीसी बोलने लगे थे। 1920 के दशक के आखिर में अपने स्कूल के छात्रावास में रहते हुए उन्होंने बाकायदा शायरी शुरू कर दी और उनके शिक्षकों को भी उनकी इस खूबी का पता चल गया। स्कूल में ईगल स्काउट में उनकी भागीदारी ने उनके बौद्धिक झुकाव का संकेत दे दिया था। बाद में यही शौक उन्हें नौसेना तक ले गया लेकिन शुरू में एक स्ट्रीट गैंग में शामिल होने के कारण उन्हें चोरी के आरोप में जेल जाना पड़ा।

लॉरेंस फरलैंगिटी के जीवन में उस स्त्री की बहुत अहमियत है जो उनके जीवन के आरंभिक दौर की परेशानियों में उनके करीब आईं और उनके हाथ में बॉदिलिअर की कविताओं का संग्रह देकर उनसे वचन लिया कि अब वह साहित्य (जो उनकी आत्मा है) का जुनून पालेंगे। बाकी सब बातों को गलत मानकर छोड़ देंगे। साहित्य के प्रति उनका लगाव काफी बढ़ गया और जिस समय वह यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना से उच्च शिक्षा हासिल कर रहे थे, उस समय हेमिंगवे, फॉकनर और योल्फ जैसे महान रचनाकारों की रचनाएं उनका ओढ़ना-बिछौना बनी हुई थीं।

उन्होंने हेमिंग्वे की शैली में अपना पहला उपन्यास उसी दौर में लिखना शुरू किया। उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद कुछ दिनों तक वह मौज-मस्ती करते रहे लेकिन जल्द ही अपने व्यावहारिक जीवन की शुरुआत की और अमेरिकी नौसेना में शामिल हो गए। परमाणु बम से हुई तबाही के छह हफ्ते बाद लॉरेंस फरलैंगिटी सेवानिवृत्त होकर पेरिस चले गए। अध्ययन और निरीक्षण के हिसाब से वह जमाना उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वर्ष 1952 में उनकी मुलाकात बीट आंदोलन के दूसरे रचनाकार केनेथ रैक्स रॉथ से हुई जो उस समय तक पश्चिमी तट पर अपनी पहचान बना चुके थे। एक रचनाकार की हैसियत से ही नहीं, बल्कि राजनीतिक कार्यकर्ता के तौर पर भी वह नौजवानों में बहुत लोकप्रिय थे। उनके साथ ने लॉरेंस फरलैंगिटी के छुपे जौहर को एकदम उछाल कर सामने ला खड़ा किया। यह वह जमाना था जब वह *सिटी लाइट्स* पत्रिका के संपादक पीटर मार्टिन के करीब आए और उनके साथ मिलकर पत्रिका के नाम से ही एक प्रकाशन *सिटी लाइट्स बुक स्टोर* स्थापित किया। यह सिर्फ एक बुक स्टोर ही नहीं था बल्कि उस समय के साहित्यकारों और कवियों की बैठक और पनाहगाह थी।

समकालीन अमेरिकी साहित्य का कोई भी विवरण *सिटी बुक स्टोर* के बिना शायद ही पूरा हो पाता। बीट पीढ़ी के सारे वैचारिक आंदोलन का यह बुक स्टोर न सिर्फ केंद्र और धुरी था बल्कि इसने नए रचनाकारों के लिए सफल कार्यशाला का भी रूप ले लिया था। *सिटी बुक स्टोर* ने पॉकेट पोएट्स शृंखला के तहत उस जमाने के बहुत सारे नए और अनुभवी रचनाकारों के लोकप्रिय संस्करण प्रकाशित किए। एक तरह से यह बीट शायरों का प्रकाशन संस्थान था जहां से न सिर्फ लॉरेंस फरलैंगिटी की सारी रचनाएं प्रकाशित हुईं बल्कि उस समय प्रकाशित होने वाली अधिकतर लोकप्रिय किताबों को पाठक तक पहुंचाने में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐलन गिंस्बर्ग की प्रसिद्ध रचना होंवेल जिसे फहशनिगारी के इल्जाम में न जाने कितनी कठिनाइयों से गुजरना पड़ा, इसी प्रकाशन संस्थान से प्रकाशित हुई थी। उसके कारण लॉरेंस फरलैंगिटी को जेल जाना पड़ा।

1958 में लॉरेंस फरलैंगिटी का पहला संग्रह *ए कोनी आइलैंड ऑफ माइंड प्रकाशित* हुआ। इस प्रकाशन संस्थान की अब तक सबसे अधिक बिकने वाली काव्य रचना यही है। विश्व की नौ भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है और दस लाख से अधिक प्रतियां बिक चुकी है।

लॉरेंस फरलैंगिटी अब भी सक्रिय हैं और उनका रचनाकार दिमाग लगातार रचनात्मक सलाहियतों का प्रदर्शन कर रहा है और वह उसी दिलचस्पी और संजीदगी से अपने *सिटी लाइट्स बुक स्टोर* में महफिलें सजा रहे हैं। लेकिन साहित्यिक संदर्भ बदल चुके हैं और बीट आंदोलन से जुड़े लोगों के वर्णन भी अब बीते दिनों की बात हो चुकी है। □